जम्मू व कश्मीर पर गोलमेज सम्मेलनः प्रधानमंत्री की टिप्पणी

दिनांक 25 फरवरी, 2006
नई दिल्ली

मेरे आमंत्रण पर इस गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे पता है कि आप में से हरेक आदमी ने इस राज्य की स्थिति पर काफी ध्यान दिया है। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि मैं यहां आपकी उपस्थिति को व्यक्तिगत रूप से काफी महत्व देता हूं। मैं खास तौर पर आपके विचारों और सुझावों की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूं। लेकिन मैं सबसे पहले कुछ विचार आपके साथ बांटना चाहूंगा। मुझे उम्मीद है कि इन विचारों से इस गोलमेज सम्मेलन के आयोजन के पीछे जो उद्देश्य हैं, वे भी स्पष्ट हो सकेंगे।

दोस्तो, जैसा कि आप सबको मालूम है जम्मू व कश्मीर हमारी सरकार के एजेंडा में सबसे ऊपर रहा है। खुद मैंने पिछले दो सालों में कई बार इस राज्य का दौरा किया है। हम राज्य सरकार से लगातार संपर्क में हैं। इस राज्य का आर्थिक पुनरूत्थान एक प्राथमिकता वाला क्षेत्र रहा है। मैंने जम्मू व कश्मीर के लिए एक विशेष आर्थिक सलाहकार परिषद का गठन किया है और मेरा कार्यालय इस राज्य को दिये गये विशेष आर्थिक पैकेज के तहत शुरू की गई विभिन्न पहलों के कार्यान्वयन की गहन निगरानी करता है। हम हाल ही में आए भूकंप से पीड़ित लोगों को राहत पहुंचाने और उनका पुर्नवास करने के काम से भी सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं।

पिछले कुछ दिनों में कुछ ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं घटी हैं जिनमें निर्दोष लोगों की जानें गई हैं। ऐसा करना सशस्त्र बलों का इरादा नहीं था और न ही होता है। मुझे इस घटना और निर्दोष लोगों की जानें जाने से बहुत दुख हुआ। मैं उन लोगों की भावनाओं से पूरी सहानुभूति रखता हूं जिन्हें इस घटना से आघात पहुंचा है।

मैं यह बताना चाहूंगा कि सशस्त्र बल स्थिति में सुधार लाने की भरसक कोशिश कर रहे हैं और जमीनी हालात में कुल मिलाकर सुधार हुआ है। फिर भी, मैंने सेना से उपचारी उपाय करने को कहा है ताकि ऐसी घटनाएं भविष्य में दोबारा न हों।

पिछले दिनों मैंने यहां मौजूद आप में से कई लोगों सहित इस राज्य के कई चुनिंदा प्रतिनिधियों के साथ भी चर्चा की है। कि हमने उन लोगों के साथ भी राजनैतिक बातचीत शुरू कर दी है जो मुख्य धारा की चुनावी प्रणाली से बाहर हैं जिसमें ऑल पार्टी हुर्रियत कांफ्रेस के प्रतिनिधि भी शामिल हैं। मैंने कई मौकों पर कहा है कि मैं व्यक्तिगत तौर पर राज्य के किसी भी उस व्यक्ति से मिलने और बातचीत करने के लिए इच्छुक हूँ जो हिंसा से परहेज करता है।

मेरे इन सभी प्रयासों में एक सहज दृष्टिकोण मेरा मार्गदर्शन करता है। जम्मू व कश्मीर के पास अपार आर्थिक क्षमता है, इस राज्य के लोगों की प्रतिभा बेजोड़ है और यहां की सांस्कृतिक विभिन्नता अनोखी है। यह राज्य लोगों के वास्तविक अधिकार और

उनकी व्यापक सुरक्षा का एक मॉडल बन सकता है और अवश्य बनेगा। यदि ऐसा होता है तो जम्मू व कश्मीर विभिन्नता में एकता, शांति और सम्पन्नता का प्रतीक बन जाएगा।

जब मैंने नवंबर, 2004 में श्रीनगर का दौरा किया था, तो आपको याद होगा कि मैंने विश्वविद्यालय के छात्रों से एक नये जम्मू व कश्मीर के निर्माण की बात कही थी। हमने अपनी आर्थिक और राजनीतिक नीतियों के जरिए इस विचार को आगे बढ़ाने के लिए तब से लेकर काफी कुछ किया है। आज मैं एक नया जम्मू और कश्मीर बनाने के लिए आपका सहयोग चाहता हूँ। एक ऐसा नया जम्मू व कश्मीर और लद्दाख जो शांति, संपन्नता और लोगों की ताकत का प्रतीक हो।

आप सभी कश्मीर के भविष्य के सच्चे हिस्सेदार हैं और केवल आपकी सक्रिय भागीदारी से ही सच्चे अर्थों में एक नये जम्मू और कश्मीर का निर्माण हो सकता है। आइए, एक ऐसा ही जम्मू व कश्मीर बनाने में इस गोलमेज सम्मेलन को एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में यादगार बनाएं।

एक गोलमेज बातचीत ही होती है। इसमें केवल एक पक्ष ही नहीं बोलता और कोई भी मूक श्रोता नहीं रहता। यह बराबर के लोगों के बीच बातचीत होती है जो मिलकर काम करने का वायदा करते हैं। आज की यह बैठक एक महत्वपूर्ण घटना है। तथापि, यह बैठक तभी ऐतिहासिक महत्व प्राप्त कर सकेगी जब हम एक ऐसी प्रक्रिया की शुरूआत करें जिसके द्वारा हम एक सर्वमान्य खाका (ब्लू-प्रिंट) तैयार कर सकें जिससे कश्मीर के इतिहास में एक नया अध्याय लिखने में मदद मिल सके। ऐसा किसी के विचारों से समझौता करके नहीं बल्कि आपसी सहिष्णुता, समझ-बूझ और सामंजस्य की भावना से हो।

बेशक, मैं इस बात को पूरी तरह समझता हूँ कि हम में से हरेक व्यक्ति एक जैसा नहीं सोचता। भविष्य के बारे में लेह और कारगिल के लोगों के विचार श्रीनगर में रहने वालों के विचार से भिन्न हो सकते हैं। कठवा में रहने वाले लोगों के विचार सोपोर के निवासियों से अलग हो सकते हैं। लेकिन यही हमारे लोकतंत्र की सच्ची ताकत है जो अलग-अलग विचारों को अहमियत देता है और उन्हें अपने रास्ते की रूकावट नहीं समझता।

लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि आप लोगों की सोच मेरी सोच जैसी होगी और आप लोग इस प्रयास में भागीदार होने के इच्छुक होंगे। यदि हम ऐसा ही दृष्टिकोण अपनाएं तो हम अपने मतभेदों को दूर कर सकते हैं। मुझे यह भी यकीन है कि दूसरे लोग जो यहां नहीं हैं, वे भी आखिरकार हमारे साथ आ जाएंगे जब एक बार उन्हें यह पता चलेगा कि विचारों के आदान-प्रदान और मिलकर काम करने में ही सबकी भलाई है।

मेरे दोस्तो, वास्तविक अधिकार केवल नारे लगाने से ही हासिल नहीं होता। जब लद्दाख से लेकर लखनपुर तक और कारगिल से लेकर कठुआ तक पूरे कश्मीर के सभी पुरूष, महिला और बच्चे अपने आप को हर तरह से सुरक्षित महसूस करने लगेंगे,

तभी हम सही मायने में कह सकते हैं कि लोगों को अधिकार मिल गए हैं। सुरक्षा का मतलब खतरे से आजादी होता है और हम इसी लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं। हम चाहते हैं जम्मू व कश्मीर के लोग अपने भविष्य को लेकर सभी खतरों से सुरक्षित महसूस करें। सुशासन के अंदर व्यापक सुरक्षा की यही भावना वास्तव में लोगों को अधिकार-संपन्न बना सकती है।

हम चाहते हैं कि लोग जिस्मानी तौर पर सुरक्षित हों और यह केवल तभी हो सकता है जब हिंसा और आतंकवाद का हमेशा के लिए खात्मा हो जाए। हम चाहते हैं कि लोग आर्थिक तौर पर भी सुरक्षित हों और यह केवल तभी हो सकता है जब इस राज्य की अपार क्षमता को इस्तेमाल में लाया जाए और हर नागरिक को अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की सुविधा सुलभ हो। हम चाहते हैं कि हरेक समुदाय राजनैतिक तौर पर सुरक्षित हो और यह केवल तभी हो सकता है जब सत्ता का विकेंद्रीकरण गाँवों तक हो।

अंत में, हम हरेक समुदाय को सांस्कृतिक और सामाजिक तौर पर सुरक्षित बनाना चाहते हैं। इसका मतलब यह है कि हम हरेक समुदाय की सांस्कृतिक विभिन्नता को महत्व देते हैं और ऐसा माहौल बनाना चाहते हैं जिसमें उनकी बोली, उनका रहन सहन और उनकी कला और हस्त शिल्प फले-फूले। और हमें यह भी सुनिश्चित करना है कि जो लोग इस राज्य से विस्थापित हुए हैं, वे भी अपने घरों को लौट सकें। अधिकारिता और व्यापक सुरक्षा का यह दृष्टिकोण सुशासन और नीतियाँ तैयार करने और उनके कार्यान्वयन की मॉनिटरिंग करने में लोगों की सक्रिय भागीदारी से संबंधित है।

यह गोलमेज सम्मेलन विचारों के आदान-प्रदान के लिये आयोजित किया गया है लेकिन जैसा कि मैंने कहा है, मैं चाहता हूं कि इस गोलमेज सम्मेलन के खत्म होते ही एक प्रक्रिया की शुरूआत हो। एक ऐसी प्रक्रिया जो राज्य के लोगों के साथ व्यापक परामर्श और बातचीत पर आधरित हो। आइये, एक नये कश्मीर के लिए योजनाओं का सृजन करके इस राज्य की नागरिक समाज संस्थाओं को शांति का अग्रदूत बनाएं। आखिरकार, एक जम्मू व कश्मीर का नव-निर्माण करना होगा जिसमें लोगों के दृष्टिकोण को भी अहमियत मिले और जो किसी भी सूरत में मशीनी तौर पर थोपा न जाए। हमें जम्मू व कश्मीर के लोगों के लिए एक बेहतर कल का निर्माण करने हेतु मिलकर नए रास्तों की खोज करनी होगी। यदि हम मिलकर काम करेंगे तो मुझे भरोसा है कि हम इस राज्य के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के सपनों को हकीकत में बदल सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि शासन की हरेक प्रक्रिया में उनकी चिंताओं और उस माहौल के निर्माण की सच्ची झलक मिले जिसमें सभी नागरिक गरिमा और आत्म-सम्मान की जिंदगी जी सकें और जिनका जीवन युद्ध, अभाव और शोषण के भय से मुक्त हो।

धन्यवाद।